॥ अद्भुतनाटक ॥

अर्थात् ।

हास्यरस का एक अतीवोत्तम अपूर्व नाटक ।

जिसे

ग्राम पूरा निवासी श्रीयुत् पंडित कमला
चरण मिश्र जी ने देशवासी रसिक जनों
के चित्त विनोदार्थ और उनके उपदेशार्थ
प्रकाशित किया ।

BENARES.

Bharat-jivan Press.

1885.

विज्ञापन ।

—❀❀❀—

विदित हो कि यह पुस्तक अद्भुत नाटक नाम की मनुष्यों के शोक विमोचनार्थ रची गयी है कैसा ही दारुण शोक क्यों न हो पुस्तक के गहते ही आनन फ़ानन मिट जावे पश्चात हंसते हंसते मशक सदृश फूल कर भूमि पै लोटता फिरै तिस में अभी तो पढ़ना शेष ही बना है इस में बरिष्टता यह अपूर्व है कि सिवाय स्वांग खिलने के निम्न लिखित आशयों का भी बिचार भली भांति दृष्ट हो जाता है ॥

सोरठा ।

हास्य ज्ञान उपदेश और वार्ता बहुत सी ।
अवधूती बिधिबेश, सो सब यामें हौं लिखत ।
पढ़िहहिं नर धरि ध्यान, रस सोई वह पाइहैं।
सज्जन सकल सयान, देखहिं नाटक चित्त धरि १

हे प्रिय महाशयो निज वस्तु की प्रशंसा अपने ही मुख से करनी अतीवानुचित है पुस्तकावलोकन पर स्पष्ट ज्ञात हो जायगा इत्यलम् ॥
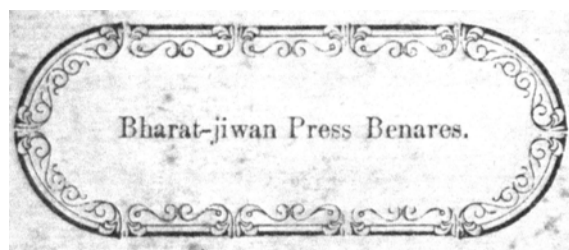
सूचना।

प्रगट हो कि नाटक रूप की कविता दो प्रकार से होती है अर्थात् दृश्य और श्रव्य जो कुछ कि देखने में आता है उसे दृश्य और जो सुनने में आता है उसे श्रव्य नाटक कहते हैं—नाटक में कवि के आने की दो युक्ति रक्खी जाती हैं या तो वह स्वांग खेलने के भाव और ऋतु विषय इत्यादि को छन्द रचना में करने का अधिकारी रहता है या नाटक पात्र के किसी वर्ण में व गाने के राग में अपनी छाप देता है छाप देने में कवि का स्वरूप स्वांग खेलते समय नहीं रचा जाता है बरन पुस्तक के समाप्त होने पर अन्तिम प्रशंसा को भी नहीँ कहता प्रशंसा जो कहता है उसे अन्तिमोयनाद व आकाश वाणी बोलते हैं॥

नाटक खेलने वाले चिन्ह कौतुक स्मरण रक्खें

नेपथ्य—जहां स्वरूप बनें

गया—नेपथ्य में गया

आया—नेपथ्य से खेल में आया

रंगभूमि—जहाँ लीला की जावे

(मनहीँ मन)—नाटक पात्र ने आपही समझा

प्रगट—नाटक पात्र ने सब को सुनाया

हा हा हा हा—नाटक पात्र खूब हंसा

उं हुं हुं—नाटक पात्र खूब रोया

छी छी छी—नाटक पात्र ने बुरा समझा या घिन प्रगट की

च च च—नाटक पात्र को दया हुई

नाम नाटकपात्रों के ।

नान्दी—मंगलाचरण कहने वाला
सूत्रधार—स्वांग खेलनेवाला
नटी—सूत्रधार की स्त्री
सपथूदास—एक अवधूत
झुनका नंद—सपथूदास का मित्र
लाल बुझक्कड़—एक मूर्खरूप पण्डित
विदरू—लाल बुझक्कड़ का भांजा
मंडूक—सपथूदास का शिष्य
कंजरी—भाटक कंजरी की पुत्री
चुभकी—झुनका नन्द की स्त्री
झाड़गिर—बकटू गिरि के बालक
काणानन्द—झाड़गिर का श्वशुर
भद्रचन्द्र – राजपुत्र
दिनेश चन्द्र – भद्रचंद्र का भाई

झपटूदास—सपथूदास का भाई
उचक्कू—एक अज्ञान मनुष्य
सेवक—झुनकानंद की सेवा करने वाला
चिपकन्दरजीव—एक राजा का नाम
गप्पसेन—एक छलिया दूत
खट्टू—राजा का चपरासी
भाटक—कंजरी का पिता
कोठक – दारोगा
सगरू – चपरासी
मंत्री – चिपकन्दर जीव का वजीर
मधुवरी – एकरानी का नाम
रसिया – मधुवरी को खोजने वाला
वसिया – तथा
कशिया – तथा
चन्द्रमती – विधवा कन्या
भद्रशालिका – श्रीकृष्ण की सखी
चन्द्रबदनी – तथा

चन्द्रप्रभाकर – तथा
हर्षदेव – भद्रचन्द के पिता का शत्रु
कोतवाल – चन्द्र का नौकर
प्रदानिका – शोकित स्त्री
गन्दार – मंत्र वशीकरन सीखने वाला
चन्दार – तथा
झगड़ू – मधुर सरोवर का मालिक
कोतवाल – पुलिस वाला
दर्शना – चपरासी
लम्पड़ – सपथू दास का पड़ोसी
चिमधू – तथा
मुकुन्दरगिरि – कुकुंदरगिर का शिष्य और पुकुन्दर गिरि का पोता

ढपोलशंख – अमोहीजन
शिवमती – तथा
इन्द्र – एक स्वरूपवान राजा
सहायक – राजाइन्द्रका मंत्री
दिव्यमंजरी – विस्त्र मोहनी
नारद – एक मुनि का नाम
शिव – एक भारी देवता
ब्रह्मा – स्टष्टिकर्त्ता
विष्णु – लक्ष्मी के पति
विजयानन्द – ज्ञानदेनेवाले
विदूषक – प्रसन्न करने वाला
प्रेमानंद – सपथूदास के मित्र
नंदिरूप – मुकुन्दरका शिष्य
कमलनंद – उत्तम परम हंस

दोहा ।

पारब्रह्मको ध्यान धरि, गुरु चरणन सिर नाय ।
अद्भुत नाटक नाम की पुस्तक रचहुं बनाय ॥ १ ॥
सकल जननसों अस विनय, देखिय आद्यो प्रान्त ।

भूल चूक को निरखकर, होइयो अधिक सुशान्त॥
कृपा भाव सी दोष तजि, लिजियो अशुध संभार।
सेवक मैं हौं सुजन को, दया वृन्द उर धार॥३॥
कानपूर के ज़िले में पूरा है एक ग्राम।
सदा तहाई हौं रहत, कमल चरण मम नाम॥

अद्भुतनाटक।

१ अंक।

नेपथ्य में गम्भीर स्वर से बाजे बज रहे हैं मधुर गान हो रहा है वहीं से नान्दी मंगला चरण पढ़ता और तंबूरा बजाय २ नाचता हुआ (जहां लीला होने वाली है) आ कर रंगभूमि में इधर उधर घूमने लगा॥

(अथ मंगलाचरणम्)

ओं तन्न इन्द्रो बरुणो मित्रो अग्निराप ओ-षधीर्वनिनो जुषन्त॥ शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थ।

हे भगवान् इन्द्र सूर्य वरुण चन्द्रमा मित्र वायु अग्नि जल वृक्षादि बनस्थ सब पदार्थ आप की आज्ञा से सब सुख स्वरूप हो के हमारा सेवन करें, हे रक्षक मरुतामुपस्थे प्राणादि के सु समीपस्थ हम आप की कृपा से शर्मन्त्स्याम सुखयुक्त सदा रहें, स्वस्तिभिः सब प्रकार के रक्षणों से

यूयंपात (अदरार्थं बहुवचनम्) आप हमारी रक्षा करो किसी प्रकार से हमारी हानि न होय ॥

(और भी)

ओं त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहंत्य, अग्नेरथी-रध्वराणांम् । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

(अर्थ)

हे अग्ने सर्वज्ञ तुम्हीं सर्वत्र "प्रशस्य" स्तुति करने के योग्य हो अन्य कोई नहीं "विदथेषु" यज्ञ और युद्धों में आप ही स्तोतव्य हो जो तुम्हारी स्तुति छोड़ के अन्य की स्तुति करता है उस का यज्ञ तथा युद्धों में विजय कभी सिद्ध नहीं होता है सहंत्य शत्रुओं के समूहों को आप ही घातक हो रथी अध्वरों में अर्थात् यज्ञ और युद्धों में आप ही रथी हो हमारे शत्रुओं के योद्धावों को जीतने वाले हो इस कारण से हमारा पराजय कभी नहीं होता ॥

(और भी)

हे हे बिमलानन्द इन्द्र निर्द्वंद उजारे ।
हे हे ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अधम उधारे ॥
जै जै करुणासिन्धु बन्धु जग जीवन हारे ।
जै जै विद्याकन्द शुद्ध स्वच्छन्द सुखारे ॥

(सूत्रधार आया और इधर उधर देख कर बोला)

सूत्रधार – वाह वाह आप कैसे आये अहा हा हा ये सब राजा लोग क्यों बैठे हुये हैं ॥

नान्दी – क्या आप सूत्रधार हैं कहिये कैसे भूल पड़े ॥

सूत्र० – भूल तो पड़ा ही हूं पर अब आप यह क्या बक रहे हैं देखिये इस से तो मेरा ही स्वांग अच्छा है ॥

(सभासदों ने कहा कि तूही अपना स्वांग दिखा)

सूत्रधार – (हंस कर) हा हा हा हा यह तो दोनों पर आप लोगों की बड़ी ही कृपा है अच्छा अब नटी को भी ले आऊं और फिर लीला करूं ॥

(सूत्रधार गया और नटी समेत नाचता हुआ आ पहुंचा)

सूत्रधार – अरी प्यारी कुछ ऐसा स्वांग कर कि जिस में ये सब महाराज प्रसन्न हो वाह वाह करें ॥

नटी – हे प्रियतम आओ पहिले हम तुम दोनों बंसी बजाय बजाय खूब नाच लें फिर स्वांग हो ॥

(दोनों छिटिक २ कर नाच रहे हैं)

(इति प्रस्तावना)

अब एक ओर से बाबा सपथूदास भभूत रमाये जटे फट कारते कांख में बाघम्बर दाबे खड़ाऊं खटखटाते चले आते हैं ॥

(सपथूदास रंगभूमि में आकर अति प्रसन्न हो बोले)

सूत्रधार – वाह वाह क्या कहना है अहा हा क्या बहार है यहाँ की भूमि तो मन्दाकिनी की भी स्वच्छता को परास्त करती है अरे मैंने तो कुछ और ही सोचा था हां हां सुध आगयी यह भूमि तो इन्द्रासन को भी लज्जित कर रही है देखो अब भी भूल गया कहना कुछ और ही था और कह कुछ और ही गया मैं पूछता हूं कि यह किस की बरात ठहरी हुई है धन्य है धन्य है धन्य है ॥

(ऐसा कहकर समाज में सब से पूछता फिरता है)

(भुनका नन्द साध्विकस्वभाव से आया)

भुनकानन्द – ये क्या धूम धाम हो रही है और यह कौन हैं जो कुछ सब से पूछते फिरते हैं ओहो हो ये तो हमारे मित्र सपथूदास हैं ले आज भले भेंट हो गयी, क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि मैंने कल प्रहर रात्रि गये आपका स्मरण किया था संयोग से आज दर्शन हो पाय गया – सत्य है "जाको जा पर सत्य सनेहू सो तिहं मिलत न कछु सन्देहू" ॥

सपथूदास – कहिये मित्र प्रसन्न तो रहे ॥

भुनकानन्द – अब भी न प्रसन्न हूंगा तो क्या प्रलय पर प्र-

सन्न हूंगा अब अपने समाचार तो कहो घर में सब कुशल पूर्वक निर्वाह करती हैं ?

सपथूदास – मित्र अभी न पूंछिये ॥

झुनका० – क्यों क्यों क्यों कुशल तो है ? ॥

सपथूदास—कुशल कहां कदाचित् होती तो फिर क्या ।

झुनका०—कुशल सर्वत्र है अवलत्ता प्रतिकूलियों के पास नहीं है मेरी समझ में आता है कि आपने कुशल पद का अर्थ नहीं समझा ॥

सपथू०—हा हा हा यह पद मानों पाणिनिकृत व्याकरण है जो कठिनाई के कारण मैं नहीं समझा ॥

झुनका०—नहीं मित्र हमने वैसे ही कह दिया क्या आप यह भी न जानेंगे अच्छा अब अपने शोक का कारण बतलाइये ॥

सपथू०—प्रिय मित्र आप को सत्य ही सत्य बतला दूं निन्नानवे के चक्कर में क्यों डालूं ॥

गुरु सन कपट मित्र सँग चोरी।
की हो निर्धन की हो कोढ़ी ॥

सुनिये, मैंने एक विवाह की इच्छा की है क्योंकि विना निज स्त्री के विशेष प्यार सन्मान और आदर भाव कोई दूसरा यथोचित नहीं कर सकता इस कारण चेले से कहा कि जा कहीं से कोई लड़की जो नवयौवना हो देख कर

मेरे पास उसे ले आ वह आज्ञा मान तुरन्त हो चला गया अब बहुत दिन व्यतीत हो गये कुछ समाचार तक नहीं पाया, चित्त व्याकुल है, इस से मैंने आप के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, अपराध क्षमा हो ॥

झुनकानन्द—हाय हाय आपने यह क्या किया जो इस अवस्था में विवाह करने पर तत्पर हुए सब सज्जन छी छी करेंगे, नहीं मैंने भूल कर कहा विवाह अवश्य ही कीजिये बल्कि हमारा भी करा दीजिये सन्तानोंत्पत्ति से आप का और हमारा नाम हो जायगा क्योंकि आज के दिन हमारे और आप के वंश में सन्तान के नाम का पुतला तक नहीं है ॥

सपथू०—आप को भी बरात करनी पड़ेगी रही एक बात सो वह भी सुन लो कि तुम सहिबोला बनोगे या नहीं ?॥

झुनकानन्द—कहिये शिष्य तो अभी आया हो नहीं और आप ने यह ठनौटी ठान ली जैसी कि लाल बुझक्कड़ ने ठानी ।

सपथू०—लाल बुझक्कड़ ने कैसी ठानी थी ॥

झुनकानन्द—मेरे कहने का आप विश्वास मानें या न मानें इस कारण जाकर बुझक्कड़ जी को लिये आता हूं वे दर्शनीय जन हैं और उनकी चतुरता सर्व सृष्टि में प्रगट है वेही अच्छे प्रकार से समझा देंगे ॥

सपथू०—हाँ हाँ मित्र उन्हीं को लाओ ॥

(झुनकानन्द गया और बुझक्कड़ जी को सब व्यौरा कह सुनाया)

(बुझक्कड़ जी सम्पूर्ण मुख में चन्दन थोपे पगड़ी बाँधे एक जामा पहिने पग तक धोती लटकाये पान खाये नैत्रों में सुरमा लगाये कांख में भारी सी पुस्तक दबाये माला मटकाते झुनकानन्द के साथ वार्ता करते हुए चले आते हैं)

(सपथूदास इत्यादि आगे बढ़ अगवानी कर रंगभूमि में लाये)

लालबु०—भला आज कौन दिन है और यह चरित्र क्या है? अच्छा यह जाने दो जो कुछ हम कहैं चित्त लगाकर सुनों ॥

झूनका०—कहिये पण्डित जी महाराज ॥

लालबु०—हूहिं—जब कहने पावें तब तो कहैं ॥

झुनका०—हे पंडितजी क्यों नहीं कहने पाते क्या कारण है!

लालबु०—अभी पोथी कहती है कि न न न कुछ भी न बोलना ॥

झुनकानन्द—तो फिर कैसे बनें जो पोथी मना करती है ॥

लालबु०—अच्छा मेरे बदले तुम्ही कह दो मैं हाँ हाँ करता जाऊंगा ॥

झुनका०—मित्र सपथूदास सुनिये पण्डित जी भी बैठे हुए हैं अब जो कुछ शंका हो इन से समाधान कर लीजिए फिर पीछे को मुझ से तर्क न करना ॥

सपथू०—भला कुछ कहो तो ॥

(झुनकानन्द कहता है और सपथू कान लगा कर सुन रहा है)

झुनका०—एक दिन बुझक्कड़ जी अपने घर पै भूखे बैठेहुए थे कि एक हिनकुला नाम ब्राह्मण ने आकर निवेदन किया कि आज मेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है सो शोध दीजिये कि मूल नक्षत्र तो नहीं है बुझक्कड़जी ने कहा कि मूल जल तो कुछ भी नहीं हैं पर शनिश्चर का बड़ा भय है हिन कुला ने कहा कि फिर क्या उपाय करें बुझक्कड़जी बोले कि थोड़ा सा तेल और कुछ लोहा और कुछ द्रव्य ला कर मुझे दे परमेश्वर ने चाहा तो शनिश्चर निर्बली हो जायगा हिनकुलाने सब सामान भोजन और दक्षिणा सहित इन को दिया तब तो ये बड़े ही प्रसन्न हुए और बिचारने लगे कि खाने को तो आज कुछ खटका ही नहीं ये एक टका जो दक्षिणा में पाया हैं इस के पलटे में हाट से छोटी २ सी सुपारियां मोल ले आऊं जब कोई मांगे कुछ कमती से बेच डालूं ऐसा करने से बहुत सी सुपारियां घर में जमा कर लूगा फिर सब को

एक साथ बेच कर जो द्रव्य पाऊंगा उस से घोड़ियां मोल लूगा फिर इन को भी बेच डालूंगा और कुल द्रव्य के दो हाथी लाऊंगा फिर इन को भी बेच कर भारी सप्त खंडा मकान बनवाय रात दिन उस में वेश्याओं को नचाया करूंगा ऐसे ही ऐसे हीरा पन्ना माणिकादि के सुन्दर पुष्प चिड़ियाँ शिवालय इत्यादि बना कर इस संसार भर में सब से बड़ा महाराजाधिराज कहलाऊंगा इतने में निद्रा आ गयी अचेत हो गए पास जो टका था सो भी कोई चुराय ले गया जब बुझक्कड़ जो जगे तो बहुत ही पछिताये, तैसे ही हे मित्र सपथू दास आप भी अधिम सोच विचार न करें —क्या जाने शिष्य आवे या न आवे ॥

सपथू०—वाह कहा तो कहा अब ऐसा मत कहना, भला जो शिष्य न आवे तो आप को क्या मिल जायगा ॥

लालबु०—हा हा हा हा मिलेगा जो कुछ सो देख लोगे ॥

सपथू०—पंडित जी मैं झुनका नन्द से बार्त्ता करता हूं आप चुप बैठे रहैं ॥

झुनका०—मित्र सपथू दास कुछ न हो मैं अभी कुछ और क्रानिस करूंगा ॥

सपथू०—हाँ हाँ क्रानिस कीजिए लाल बुझक्कड़ तो स्वरूप ही दिखाने के हैं इन्हें आता जाता कुछ भी नहीं ॥

(झुनका नन्द सपथू दास के बचनों को सुनकर चुप चाप चला गया)

(बिदरू और झुनकानन्द आते हैं)

बिदरू—अहाहा मामा साहब आप भी यहीं बिराजते हैं कहिये प्रसन्न ?

(लाल बुझक्कड़ ने हां करके समीप बैठाल लिया)

लालबु०—कहो बिदरू तुम को यहाँ कौन लाया मुझ को कैन जाना कुछ काम था या धोखेही मे रपट पड़े आज के दिन ये सब लोग क्यों टिड्डो दल को भांति इस स्थान मे घिरे पडे हैं ॥

बिदरू—मामा साहिब आप तो पहिले से आये हुए हैं और मैं अब आया हूं जो तुम पूछते हो सो भला मैं क्या जानं मामा तुम तो बड़े प्रवीण हो यह मन ही से बिचार लो कि कौन लाया और कैसे पहिचाना ॥

लालबु०—मैंने यह तो पहलेही बिचार लिया था परन्तु सुध न रहने के कारण पूछ बैठा सो वही फिर सुध आ गयी ॥

(बिदरू झुनका नन्द से सपथू दास का हाल पूछते हैं)

(झुनका नन्द ने यथोचित कह सुनाया)

बिदरू—अरे बाबा सपथू दास यह आप ने क्या किया ?॥

सपथू०—क्या किया कुछ कहोगे ॥

बिदरू—हम ने सुना है कि आप इस अवस्था में बिवाह करेंगे ॥

सपथू०—सत्य तो है तुम्हें क्या पड़ी अपनी राह देखो ॥

बिदरू—राह तो हम देखेहींगे पर कुछ मेरी बातेंभी गाठ बाँध लो ॥

सपथू०—आज ही हम ने जाना कि बातों की भी गाठें बंधती हैं ॥

बिदरू—हाँ सत्य है सृष्टि में रहोगे तो अभी बहुत कुछ जानोगे अब एक छोटी सी बात चित्त लगा कर सुनो वह यह है कि मैं मार्ग में एक दिन चला जाता था संयोग से मदन प्रिया स्त्री भी सन्मुख आती हुई दीख पड़ी उसे ऐसी प्रीति मेरे मिलने की हुई कि जिस का बर्णन नहीं मैंने प्रथम ही से समीप पहुंच यह निवेदन किया कि जो मेरा और तुम्हारा परस्पर बिवाह हो जावे तो महा आनन्द मिले उस ने कहना स्वीकार किया सब साँठा गांठा हो ही गया था केवल मुद्रिका के अदल बदल की देरी थी तब तक मेरे यहां से एक माली ने आकर कहा ऐं ऐं तुम यह क्या करने पर तत्पर हो, लज्जा नहीं आती छी छी छी ऐसी पतिव्रता

स्त्री के सत्य को भंग करोगे उसी दिन से आज तक देखो बिना स्त्री के रहा हूं सब प्रकार के लोग मिलते हैं पर बिवाह की इच्छा कदापि नहीं करता तिस से हे बाबा जी आप भी कुछ बिवाह हेतु चित्त न डुलाइये॥

सपथू०—बिवाह क्या दुनियाँ भर की अपकीर्ति सिर पर है कोई कहीं मना कर रहा है कोई कहीं रोक रहा है कोई कहीं—

(ऐसे ही सब परस्पर वार्ता करतेहैं और चेला एक कंजरी लिये चला आता है मार्ग की धूली से शरीर मलीन होगये हैं)

(शिष्य मंडूक रंगभूमि में आय सपथूदास को देख दूर ही से बोला)

शिष्य—गुरु जी प्रणाम है मैंने तो बनकुटी में आप को बहुत ही खोजा पर पता कहीं भी न लगा हांते २ बड़ी कठिनाई में निकट आय पहुंचा हूं लीजिये यही एक लड़की मिली है धन्य है इस की सिधाई को मेरी समझ में तो सम्पूर्ण भूमि में कोई भी इस के समान स्त्री न होगी॥

सपथूदास—अच्छा बच्चे प्रसन्न रह क्या कारण है कि मार्ग तू भटकता फिरा कि जिस से देरी हो गयी—

शिष्य—गुरु जी प्रसन्नता के कारण ऐसी बातें करते हो

कि वह समझ में नहीं आती मानों उन्मत होगये हो ॥

सपथूदास—बच्चे यथार्थ में मुझे अति प्रसन्नता है, जो अब भी नवीन नारि मिलने पर आनन्द न होगा तो फिर अब और का क्या ठीक—खैर यह जाने दे इस लड़की का पता तो बतला कहां से लाया तूने तो बाबा के पीछे बहुत ही क्लेश उठाया बच्चे मुझे भी तेरे वियोग से रात दिन चैन नहीं पड़ा, मारे शोक के दुर्बल पड़ गया हूं ॥

शिष्य—दक्खिन में एक दैत्यपुर नगरी है उसी में धुनाश्र दैत्य महामूंच रहता है वहाँ से रात्रि के समय इसको भगाय लाया हूं ॥

(सपथूदास झुनकानन्द से कुछ कहते हैं)

सपथूदास—आप ने सत्य कहा था कि इस अवस्था में बिवाह न कीजिये ॥

झुनका०—देखो देखो हम ने कब कहा था ॥

सपथू०—हां हां हां हम भूल गये ये तो भाई विदरू आप ने कहा था कि आप ने बिवाह का ठान क्यों ठाना यह अच्छा नहीं सो उस बात पर मैंने कुछ ध्यान न दिया अब जैसा कहो करूं ॥

विदरू—पराए बीच में हम हाथ न देंगे जो कुछ पहिले कह चुका हूं उसी से भला बुरा नीच ऊंच विचार लो॥

सपथू०—खैर हम सदृश अवधूतों को जो कुछ मिले संतोष

कार प्रसन्नता से लेना चाहिये इस के विषय में टुम्मक गिरि ने यह कहा है ॥

जो कछु मिलै हर्ष से लेहू ।
तान तर्क नहिं वामें देहू ॥

(झुनकानन्द बोल उठा)

झुनकानन्द—आप जो कहेंगे और करेंगे वह अच्छा ही है।

सपथूदास—अच्छा ये बातें जाने दो अब चार सत्संगी साथ हो कर के इस के घर से बिवाह लावें जो बिना भाँवरी फिरे इसे ग्रहण करूंगा तो ईश्वर के यहाँ से दोषी हूंगा और जगत में अपकीर्ति होगी ॥

झुनका०—आप वहीं क्यों न चले जाते लड़की को जो पहिले ही से निकट बुला लिया अब फिर अभी उस के घर बिवाहने जाते हो इस का क्या कारण है ॥

सपथू० ॥ ये बातें सब कहि गये, अगले लोग बनाय ।
काम कार्य्य कारण विषय, नहिं जल्दी जुटि जाय ।
देखि भलि अरु जांच कर, करहि पुरुष जो व्याह ।
दुख नहिं कबहूं पाइहै, बढ़िय अधिक उत्साह ।

झुनकानन्द—सत्य है आप खूब समझते हैं पर अब बारात की सजाई करिये ॥

(चुभकी एक ओर से चली आती है इस का स्वरूप महा भयंकर है)

चुभकी—हे पति जल्द ही चलो घर में जो एक बाघ बह रहा करता था मर गया और दोनों मृग भी मरने ही पर हैं ॥

(सपथूदास और मंडूक तो रंगभूमि में रहे और सब नेपथ्य को चले गये)

(सपथूदास मंडूक से कहता है)

सपथू०—बच्चे बारात का सब सामान तो संचय कर ला ॥

शिष्य—अच्छा जो आज्ञा हो कहिये शीघ्र ही कर लाऊं ॥

(चेला एक पुर में जाकर पालकी घोड़े इत्यादि मांग कर ले आया और बोला)

शिष्य—गुरु जो और जो कुछ चाहना हो कहो अभी बात की बात में ले आऊं ॥

सपथूदास—बच्चे सब न्योतहारियों को भी बुला लो—

(चेला गया और झाड़गिरि काणानन्द झपटूदास को साथ ले आया आगे २ शिष्य तिस के पीछे झाड़गिरि लाठी टेके और आंख मीचे तिस के पीछे काणानन्द एक आंख दाबे और झपटूदास पैर घसिलाता चला आता है)

सपथूदास—बेटा सदैव प्रसन्न रहो तुम्हारी प्रशंसा हम कहाँ तक करें अब जा तू झुनकानन्द से कह कि चलिये गुरु जी ने विवाह हेतु बारात का सब सामान जोड़ लिया ॥

[एक ओर से उचक्कू चला आता है]

[यथा नाम तथा गुणा:]

[चेला ने उचक्कू से कहा कि गुरु जी जो जो२ काम बतावें कर देना मै घर हो आऊं]

[चेला मंडूक चला गया]

उचक्कू—गुरु जू काह हुकुम है ॥

सपथूदास—जाओ झुनकानन्द को ले आओ ॥

उचक्कू—गुरु जी कह कहो झुनकानन्द । ऐं, झुनकानन्द का घर तौ मैं जनतै नाईं आय और जो झुकनानन्द का पता लगिहिउ जाय तो काह कहब ॥

सपथूदा०—हरे हरे तेरे मुंह से तो नाम भी ठीक नहीं निकलती ॥

उचक्कू—गुरु जी मारे भूख के कल नाईं पड़त ॥

सपथू—अच्छा कुछ जल पाण उपहार कर ले ॥

उचक्कू—अबै नाहीं लौटि कै भोषनु करिहौं ॥

(उचक्कू चलता हुआ और भुनकानन्द के द्वार पर जाकर पुकारता है)

उचक्कू—चुकनानन्द हो होत श्रो फुकनानन्द हौ कि नाहीं

(घर से एक सेवक निकला)

सेवक—तुव कहाँ रहत बाटे मोको हलवा बता कुठिलानन्द को बुलाय कहा करीबा ॥

उचक्कू—मकुनानन्द को मोरे गुरु जी ने बुलायो आप सो जल्दी चलें ढूंढ़ि ढाँढ़ि कै अब हौं पठवौ और जो तू ने पूंछो कि कहाँ रहत बाटे सो मैं झुझुवापुर में रहत हौं जो कछु कहन सुनन का होय कहौ ॥

सेवक—झुमकानन्द कतौँ अब्बहीं गयोबा देखु गैलवां माँ मिल जायं तो लिवा जा ॥

(एक दूसरे द्वार से निकल कर भुनकानन्द ने दिखलाई दे दी)

(उचक्कू मार्ग में भुनकानन्द को देख कर बोला)

सेवक—चलु तोहिं मोरे गुरु जी ने बुलाय पठयो सजि धजि कै जल्दी पल्दी चलु ॥

(भुनकानन्द सपथू दास के पास गया)

सपथू०—आ गये मित्र कहिये आप की स्त्री ने तो कुछ मेरे को नहीं कहला भेजा ॥

झुनका०—यह बतलाओ कि बारात की तय्यारी तुम ने कर ली ? ॥

सपथू०—सब तय्यारी हो गयी बल्कि न्योतहारी भी आ गये ॥

झुनका०—हाँ हाँ यह तो बतलाइये कि कौन २ से जन बारात में जावेंगे—

सपथू०—मित्र बाराती तो अच्छे हो गए एक हमारे मित्र बकठू गिरि के बालक झाड़ गिरि दूसरे इन के श्वशुर काणा नन्द तीसरे भाई झपटू दास चौथे चेला मंडूक पाँचवें आप—

झुनका०—मित्र बाराती तो अच्छे हो गए लेकिन ऐसे अशकुन मंगल कार्य्य में न होना चाहिए ॥

सपथू०—अशकुन कैसे ?

झुनका०—इन्हीं आप के बरातियों में पहिला तो अन्धा दूसरा काणा तीसरा लूला है ॥

सपथू०—हम से अवधूतों को ऐसी बातों का बिचार नहीं

(मंडूक आया उचक्कू चला गया)

(सभों ने अरुण वस्त्र धारण किए और शरीर में भभूत रमाई)

(सपथू दास पालकी पर चढ़ा और सब लोग घोड़ों पर चढ़े बरात चली बर के आगे २ कुत्ते भूकते जाते पीछे

घोड़े हिनहिनाते हैं और ये लोग गाल और ताली बजाते प्रसन्नचित्त चले जाते हैं ॥

पटाक्षेप।

२ अंक आरंभ हुआ।

कई दिन के बाद बरातियों को मार्ग में एक बन मिला

सपधू०—ओहोहो यह कौन सा बन है कि जहाँ की झी- लों पर काले नीले और धूमरे पीले अरुण इत्यादि रंग बरंग के अनेक पक्षी कलोलें कर रहे हैं कमल खिल रहे हैं कज्जल स्वरूप पर्वतों पर सहस्रों भैरवी चण्डा- बेली व गदावली अवधूत सम्पूर्ण शरीर में भस्म रमाये नेत्र मूंदे हुए नंग धड़ङ्ग जंजीरे डाले हुए झूम रहे हैं काली घटा चहुंओर से घिर आयी है बिजली तड़प रही है बादल घोर शब्द से गरज रहे हैं पानी झि- म्झि २ झलहर २ बरस रहा है कोयल कूक रही है ...र बन मोर मचा रहे हैं जंगली जीव सब हुकार रहे ...ं सिंह हहरा रहे हैं शार्दूल हाथियों को आकाश में लिए जाता है भूत बैताल प्रेत राक्षस योगिनी भो- गिनी शंखिनी डंकनी खबीसनी लभीसनी इत्यादि नृत्य कर रही हैं काली जो तमाम मुण्ड माला धारण

किये खड्ग लिये घूम रही हैं कोई कहता है पकड़ो पकड़ो जाने न पावें जाने न पावें कोई कहता है पकड़ पकड़ मार मार धरु धरु जात जात है कोई कहता है देखो ये हैं देखो ये हैं भगत भगत हैं—

सरिता बहु गहरी बहै हहर हहर हहराय।
मगर नाग कच्छप दिसैं जिया मोर भहराय॥

शिष्य—गुरू जी यह चरित्र निरख मुझे बड़ा ही भय लगता है इस से भागही चलना ठीक है॥

(सब भाग गये सपथू अकेला रह गया)

सपथू०—(मन ही मन) झुनकानन्द ने सत्य कहा था कि साथ असकुन है इस का होनहार भला नहीं खैर अब चल देखूं कि वह लोग जो हमारे साथ में थे कहां हैं।

(सपथूदास ने सब बरातियों को जाकर ढूंढ़ा)

(काशानन्द ने सपथूदास को देखकर यह कहा)

काशानंद—आ गये, कहिये कुशल तो रही॥

सपथू—भाइयो मैं अब बिवाह का फल पा गया बस अब कुटी को लौट चलिये—

झाड़गिर—नहीं नहीं आप बिवाह करें आनन्द [illegible] काटें हम सब भले बुरे के सहायक हैं॥

सपथू०—हां तभी तो अकेले छोड़ भग खड़े हुए वैसे तो आप की बड़ी ही कृपा है—

(सपथूदास दैत्यपुर गांव की हद्द पर जब पहुंचा तब बोला)

सपथू०—मित्रो एक बात का चलते समय ध्यान न रखा था और न कुछ मडूक ही ने कहा अब कैसा करें ॥

झपटू०—अच्छा कहो तो ॥

सपथू०—क्या कहूं इस कंजरी को मंडूक छिपा कर भगा लाया था और मैं अब बिदाइने आया हूं यह तो वही, ठहरी कि जिस शाख पर बैठो उसी को काटो—

झप०—अरे हा हाय यह तूने क्या किया अच्छा अभी और है इस कञ्जरी को यहीं छोड़ दो फिर भाग चलें ॥

[सबों ने ऐसा ही किया]

[सपथूदास ने पालकी घोड़े इत्यादि स्कंधधारों के द्वारा अपने देश को पहुंचा दिये]

सपथू०—भाइयो जञ्जाल से छूट आये पर अब क्षुधा लगी है क्योंकि चार दिन निराहार व्यतीत हो गए हैं इस कारण जीव आत्मा से बाहर हुआ जाता है—

कायानन्द—यह एक नगरी दिखलायी पड़ती है इसी में जाकर भिक्षा भवन कीजिये हम भी कहीं दाता का द्वार देखने जाते हैं ॥

[थोड़ी देर बाद सब घूम कर लौट आये]

सपथू०—भाइयो मैं तो सारी नगरी भटक आया एक चुटकी तक न मिली यह बस्ती हो ऐसी है जा इस बस्ती का भला न हो—अब एक उपाय यह भी समझ में आता है कि कुछ ढोंग कर के या गान विद्या के बल से इस पुरी में भिक्षा भवन करें, कहो तुम कोई गाना जानते हो ॥

[सबों ने कहा कि गाना वाना कुछ भी नहीं जानते]

सपथू०—अच्छा देखा जायगा हम माँगते जायंगे तुम लोग झुरियाते जाना ॥

[सब गये और राजा साहब चिपकन्दर जीव के द्वार पर पहुंचे]

राजा०—महाराजो प्रणाम है कहिये आप लोगों ने किस प्रयोजनार्थ दीनगृह में सुशोभित हो तथा दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया—

सपथू०—भैरव जी कुशल करे हम लोग गाना सुना कर आप से कुछ भिक्षा लिया चाहते हैं—

राजा—अच्छा महाराज गाइये सुनाइये ॥

(सपथूदास हरे २ नारायण स्वयंभू सदा शिव कह कर गाता है)

(राजा साहब सुन रहे हैं)

(गाना होली का चौपड़ा में)

कैसी हरि मेरी सुधि बिसराई।
जो पतियौ लग नाहिं पठाई।
पहिले तो नेह बढ़ायो तिल तिल।
अब कस कीन्हीं निठुराई॥
आप तो जाय द्वारिका छाये।
हम को दीन्हं बिहाई (कैसी हरि०)
मैं जमुना जल न्हान करत थी।
लीन्ह्यों चीर चुराई॥
बहु प्रकार मैं बिनती कीन्हीं।
तब दीन्ह्यों यदुराइ (कैसी हरि०)
भांति अनेकिन लीला करि कै।
मन बश कियो कन्हाई॥
तुम्हरोइ ध्यान दिवस निसि व्यापत।
और कछू न सुहाई (कैसी हरि०)
सब गोपिन को चित हरि लीन्हीं।
धुनि बँसिया की सुनाई॥

कमलाचरण आस चरणन की ।
गोपिन ध्यान लगाई (कैसी हरि०)
(राजा साहब प्रसन्न हो कर बोले)

राजा—हो सेवको इन अवधूतों की अति सेवा और शिष्टा करो इन्हीं के द्वारा यह अधम शरीर भवसागर से पार हो कर शिवपुरी में जाय मोक्ष पाता है ॥

[राजा साहब अन्दर गये और अवधूत जन टिकाश्रम में आये]

[एक ओर से गप्पसेन चला आता है]

गप्पसेन—कहो खट्टू, राजा साहब क्या मकान में चले गये? जाओ उन से कहो कि गप्पसेन जासूस द्वार पर खड़ा है॥

[खट्टू राजा साहब को भीतर से लिवाय आया]

[राजा साहब गप्पसेन को देख कर बोले]

राजा—गप्पसेन तुम अभी कहां से आते हो और क्या खबर लाये ? ॥

गप्पसेन—महाराज एक अवधूत कि जिस का नाम सपथू-दास है उस का शिष्य, भाटक नाम कंजर की लड़की को बुला लाया है या भगा लाया है सो वह कहता है कि मैं शिष्य को जहां कहीं पाऊंगा ढूंढ़ कर मार डालूंगा इस से आप को खबर दी कि जिस में न्याय हो॥

[राजा साहब ने भाटक को बुलाया चपरासी लिवा लाया]

राजा—कहो भाटक तुम सपथूदास के शिष्य को क्यों मार डालने कहते हो ? ॥

[भाटक हाथ जोड़ सिर नाय बड़े क्रोध से बोला]

भाटक—मालिक मोर धिया को सपथुवा को चेलो रातिकों बीच घर सें भगा लायो हुकुम होइ जाय तौ वाकी बोटी २ उड़ाय देवं ॥

[राजा साहब ने चपरासी को भेज कर सबों को बुलाया]

[झाड़गिरि झपटूदास काणानन्द मंडूक और सपथूदास आये]

राजा०—है कोई पुलिस का आदमी जो इन सब छलियों को बन्दीगृह में ले जावे ॥

कोठक—आया महाराज; चलो सब लोग चलो ॥

सपथू०—धीरे से एक बात आप से कहूंगा ॥

कोठक—कहो क्या कहते हो ॥

सपथू०—साहब छोड़ देव भैरवं जी तुम को प्रसन्न रक्खेंगा हम को जो समझोगे तो पुण्यभागी होगे ॥

[कोठक चार चार घेंचे सब को लगाकर बोला]

कोठक—चलता है या नहीं मार खा लेगा तब चलेगा लाओ तो सगरू इन सब के बेड़ियाँ डाल दें ॥

सगरू—लीजिये ॥

[बेड़ियाँ लाया]

[कोठक पहिना कर ले चला]

सपथूदा०—हाय दई मैंने किये का फल पाया रे दई, अरी बुद्धि तूने पहिले से मुझे क्यों न चिताया अब क्या करूं हाय कहाँ जाऊं ॥

कोठक—चल बे चल कहाँ जाऊं कहाँ जाऊं करता है बड़चो—नालायक सुअर पाजी बेवकूफ लुच्चा छली बद-माश ओछदा राफ़ज़ी बंदीगृह को चल नहीं तो मारते मारते डंडों के देह भर्त्ता कर देऊंगा ॥

सपथू०—चलता हूं मालिक चलता हूं ॥

[कोठक सब को बांध आया]

[अब एक ओर से कंजरी आकर राजा साहब से यह कहती है]

कंजरी—राजा जू मैं तो याही अवधूत सों ब्याह करिहौं नाहिंन जान गंवाय दीहौं ॥

राजा०—किस के साथ ॥

कंजरी—सपथूदास के संग ॥

[राजा साहिब ने भाटक को बुला कर कहा]

राजा—भाटक अब तुम अपने घर को जाओ देखो मेरी लड़की जो उस से व्याह करने पर तय्यार है ॥

भाटक—रे दइया रे दइया इयो गजबु, अच्छा साहेब मैं तो अब जातेहौं ईसुर के घर मा अहिकै औ हमारि टीख जैइहै ॥

[भाटक चला गया और कंजरी भी कहीं चलीगई]

[मंत्री जी साहब राजा साहब की इजलास में जाते थे कि मार्ग में यकायक गाने का शब्द सुन पड़ा अपने सेवक से कहा कि इस गाने वाले को मेरे पास ले आओ]

[सेवक कंजरी को ले आया]

कंजरी—आपुने मोकों काहि बुलायो ॥

मंत्री—क्या अभी तूही गारही थी ॥

कंजरी—हां महरजवा गावति काहौं बताव तो ॥

मंत्री—तू अभी क्या ज़ोर ज़ोर से बक रही थी ॥

कंजरी—बलमा अपने का खोजति रहौं कोई सुनाय धाहौं॥

[गाना पूर्वी मे धुन सारंग]

बालम बिन नींद न आवत रतियां ।
सुधि आये फाटत छतियां ॥

जाग जाग सारी रैन गुज़ारूं ।
अब कोइ पिया मिलन की सुनावति बतियां॥
यहि आसा अटकाय रहूं ।
नाहिं तो जिया मेरो तुरतहिं जतियां (बा०)
रोय रोय नयनन को दुखवौं ।
आस विहाय प्राण कस रखियां॥
कमल चरण मोहिं लाय दिखा दे ।
निरखि परखि समुझि मोरी गतियां (बाल०)

[मंत्री ने इस कंजरी का सब व्यौरा राजा साहब से जा कहा]

[सब लोगों को कोठक फिर बंदीगृह से ले आये।]

राजा—लो अब तुम सब कंजरी को ले जाओ फिर ऐसा काम कभी मत करना—

[सपथूदास इत्यादि वहां से चलते हुये मार्ग में झुनकानन्द मिला]

सपथू०—प्यारी मुझे यह निश्चय था कि तू मेरा स्नेह कदापि न भूलेगी कदाचित् तू चाहे भूल भी जाती पर मैं तुझे कभी न भूलता ॥

झुनका—अब ऐसी बातें घर में करियौ हम सबों के शरीर

मारे क्षुधा के अशक्ति हो गये हैं माँस तनिक भी नहीं रहा पांजर रह गयी है इस कारण जल्द ही खाने पीने का उपाय करो नहीं तो प्राण जाते हैं—

सपथूदा०—भाइयो वही हाल क्षुधा का मेरा है अब क्या करूं जो भिक्षा भवन करूं तो भय लगता है कि पहिले कीसी व्यवस्था सिर पर कहीं न आ पड़े अलबत्ता कजरी बन में चलो वहाँ मंत्र जंत्र तंत्र के द्वारा मनुष्यों को ठग कर उदर पोषण करें करावें॥

[चलते २ जब कई दिन व्यतीत हो गये और कजरी बन भी देख पड़ने लगा तब सपथूदास ने सब साथियों से यह कहा]

सपथू०—सब लोग खूब भभूत रमाओ और जटे भी फटकार दो पीछे यहाँ से चल मधुर सरोवर पर कुटी लगावें॥

[सबों ने ऐसा ही किया]

[एक ओर से मधुवरी लड़के को गोद में लिये चली आती है]

[सुकुमारता के कारण चला नहीं जाता]

मधुवरी—अरे राजा जी कहां छोड़ गये मैं आप के बिना अकेली कैसे रहूंगी हाय कहाँ मेरा फूलों की सेज पर पैर धरने में भी हिचकता था कि गड़ न जावे और

हाय दई कहाँ ये बन में कांटो पर चलना हैं ईश्वर मुझ दासी ने आप का क्या अपराध किया था जो इस दशा को पहुंचाया हे धरती तू जगह दे तो मैं तुझी में समा जाऊं अब कदापि मैं जीना नहीँ चाहती जहाँ मेरा पति गया वहीँ जब मैं भी पहुंचूगी तभी आनन्द पाऊंगी—

[धरती फट गयी और मधुवरी गोद के बालक को छोड़ आप उसी में समा गयी]

[मधुवरी को ढूढ़ते हुये रसिया घसिया और कशिया इत्यादि वहीं आ पहुंचे और बालक को रोता देख अकेला पाय सपथूदास आदि अवधूतों के पास आय शोकित बचन बोले]

रसिया—बाबा जी इस लड़के की माता नहीं देख पड़ती कि कहां है॥

सपथू—हाँ हां बच्चे मैंने देखा है यहीँ अभी थी॥

काशानन्द—नहीं वो धरती में समाय गयी है॥

रसिया—हाय २ च च च रानी साहब ने महा कष्ट पाया इन के पाये हुए क्लेश को सुन पशु पची भी रोदन करेंगे॥

घसिया—अच्छा भाई रसिया यह खबर तो राजा साहब के लड़कों को जलदही सुनाना चाहिए माता पीछे भटकती फिरती होंगी॥

सपथू०—हाँ बचे खबर तो करही देव पर मुझे इस रानी का पता तो बतलाओ हाय २ मुझे पछतावा हो गया पास ही थी तो भी न देख लिया देखो तो इस बालक को हाय हाय मारे क्षुधा के मलीन हो गया है तो भी कान्ति को निरख कर चन्द्र लज्जित होते हैं॥

रसिया—एक राजा पुष्पचन्द्र नाम सरोजपुर में बैठे हुये न्याय कर रहे थे इतने में प्रभुकुमार ने आकर निवेदन किया कि रमणपुर का राजा हर्षदेव आज बहुत सा कटक सजाये चला आता है निश्चय है कि इसी नगरी पै चढ़ाव कर देगा तिस से आप भी अपनी सेना ठीक ठाक कर लें तुरंत ही में फिर कुछ बन न पड़ेगा जबतक हमारे राजा जी सेना इकट्ठी करें करें कि उस ने च-ढ़ाई कर दी और सब द्रव्य लूट लिया फिर कटक लेकर गढ़ में जो सरोजपुर के बीचों बीच में बना हुआ है पहुंचा और राजा जो को मार डाला जब रानी जी ने यह खबर पाई सुनते ही मूर्छित हो गयीं पश्चात सचेत होने पर सोरी के बालक को गोद में ले भग खड़ी हुई इन्हीं रानी जी के तीन पुत्र अभी और हैं एक तो जिस की आयु पन्द्रह बरस की है उस का नाम भद्रचन्द्र और दो जिन में से एक का नाम दिनेशचन्द्र और एक का नाम चन्द्रप्रभाकर इन की भी आयु लग-भग बारह २ वर्ष के होगी सो अब इस का भी ठीक नहीं कि कहाँ होंगे अभी तक बचे रहे थे जब से यहां रानी जी के खोजने को आया हूं तब से राजकुमारी का

कुछ हाल नहीं पाया है बाबा जी ये बालक क्या परमेश्वर ही के रूप मालूम पड़ते हैं ॥

(इतने में राजपुत्र भी माता को खोजते हुये आ पहुंचे)

भद्रचन्द—कहो रसिया मेरी माता जी कहाँ है ? ॥

रसिया—हे कुंवरो मेरे मुख से (इतना कह कर रसिया ने रो दिया)

(सब राजपुत्र भी रोय २ व्याकुल हो रानी जी को ऐसे ढूढ़ रहे हैं कि जैसे महामूम के बहुत से रत्न मानों कहीं गिर जावें और वह बिलख २ कर ढूढ़ता फिरे)

दिनेशचन्द्र—अरे आइशा माता कहां गयी हाय माता, हाय माता ॥

(चन्द्रप्रभाकर माता को बिसूर २ बहुत ही व्याकुल हो रहा है)

(गाना दोहरा में)

भद्रच०—हे माता अब तुम कहां। मिलहु शीघ्र मुहिं आय ॥
बिना तुम्हारे कल नहीं। फटो कलेजा जाय ॥
भाय हमारे रोवते। खड़े खड़े सब आज ॥
दुख कबहूं पायो नहीं। पलटि गयो विधि राज ॥
देहु मातु दर्शन अभी। नाहिं तजौं अब प्रान ॥
हे अम्बा अम्बा मता। करहु दृसित कल्यान ॥

दिनेश च० ॥ अरे भाय आवहिं कहाँ । खोजन को निज मात ॥
हे भाई मरनो मेरा । जो होवहि यहि रात ॥
तो मोको समुझो अतिहि । जियब चहत नहिं भाय ॥
हाय देहि कोइ तुरत ही । मातुहिं मोहिं मिलाय ॥
आज दैव ने कर्म में । यही जोग लिख दीन्ह ॥
माता बिछुरन छोड़ गयो । काह पाप हम कीन्ह ॥
भद्र च०—भइया माता मिलहि अब । नहिं मलीन कर चित्त ॥
मैं तुम सन सची कहूं । समुझ सत्य मोहिं नित्त ॥
भइया सोचहु कारे तो । दुर्बल होत शरीर ॥
माता देखहु आवहीं । चित नहिं होव अधीर ॥

(इन के शत्रु राजा हर्षदेव ने आकर राज-पुत्रों को घेर लिया और तलवार दिखा कर भय दिया कि इसी से तुम को काट डालूंगा)

हर्षदेव—चल बे इधर रे चल बे इधर ।
पिता मर गया माता किधर ॥
जो जल्दी से देते न मुझ को जवाब
तेरा झट बनादूं अभी मैं कबाब ॥
भाग कर घर से तू आया यहाँ ।
मुझ को न जाना कि था है जहाँ ॥
चखाता हूं भगने को अबहीं मज़ा ।
मुजरिम में होती है तेरी कज़ा ॥
भद्रचंद्र—शरण आप की सदा हौं । करिये पालन मोर ।
फिर आगे अधिकार है । ठाढ़ा हूं कर जोर ॥
मैं बालक अज्ञान अति । करिय क्रोध नहिं राज ॥

मुझ को जिन मनचुर लखो । काह बिगाड़ो काज ॥
जो बदलौ पितु को कहौ । तौ कसूर केहि केर ॥
न्याय शास्त्र विधि सोचिए । सज़ा करिय नहिं देर ॥
एक माता मिलती नहीं । तलफत हौं दिन रैन ॥
दूजा भयो तुम्हारो बड़ो । कस होवहि मन चैन ॥
पितह देश अब तजि दियो । रह्यो शोक बहु छाय ॥
खड़ा २ बिनती करूं । हाथ जोड़ि सिर नाय ॥
हर्षदेव—जगत में न रक्खूंगा जिन्दा तुझे।
करूंगा कतल खुद गुस्सा मुझे ॥
बालदा तेरी को बना लूं हरम ।
इज्जत न बख्शूं करूं सब करम ॥
तू नहीं जानता क्या नाम मेरा ।
बदन नुचवाउंगा कुत्तों से तेरा ॥
सिरों को तेरे मैं डालूंगा काट ।
कहदूं जलादों से फिरावें वो हाट ॥
फिर राज तेरी में भेजूंगा सर ।
काटूंगा लश्कर में जितने हैं नर ॥
चंद्रप्र० ॥ ऐ राजा जी क्या खता । मों पर आनि दिखाय ॥
करत रोष जो अधिक हौ । दीन्ह्यों कोय सिखाय ॥
पिता हमारे शुद्ध अति । कीन्हें स्वर्ग में धाम ॥
तिन को केहि ने नाम अब । करि दीन्ह्यों बदनाम ॥
या दुनियां में छल बड़ो । नेकी समुझ न कोय ॥
पितु जिन से नेकी करी । वह शत्रु अब होय ॥
तासें हम को लखत हौ । भाव शत्रुता माहिं ॥

अब सच्ची जो सत्य हो। हत करिये हम काहिं ॥
भइया ने बिनती करी। दया तनिक नहिं होहि ॥
जो बालक में होत नहिं। मजा देखइतों तोहि ॥

(चन्द्र प्रभाकर के वचनों को सुन हर्षदेव अति क्रोधित होय बोले कि कोत्वाल जी कहां गये जल्द ही आकर राजकुंवरी को शूली दो)

(कोतवाल साहिब आये)

कोतवाल—राजा साहब इन सब को शूली दे दूं या सिर्फ इस लड़के को ॥

राजा—नहीं नहीं सब को ॥

(कोतवाल साहिब ने शूली देने के लिये सब सामान दुरुस्त किया और मुश्कें बांध कर शूली स्थान की तरफ़ ले चले)

(धरती डगमगाने लगी

राजा—अच्छा २ अभी इन को शूली न दो सिर्फ मुश्कें बांध कर हमारे देश में ले चलो वहाँ सबों को अच्छी तरह से समझूंगा ॥

कोतवाल—मुश्कें तो बंधी हुई हैं आप चलें ॥

(सब चले गये)

३ अंक आरंभ हुआ।

(एक ओर से प्रदानिका रोती हुई यह कहती चली आती है कि मेरे इस बालक को सर्प ने काट खाया जो कोई आराम कर दे उस को मैं पांच सौ मुद्रा भेट में दूंगी)

सपथूदास—बच्ची यहां आओ यहाँ आओ मैं अभी आराम कर दूंगा ॥

(प्रदानिका आई)

सपथूदा०—ले यह भभूत बालक के मस्तक में लगाव ॥

[फिर मंत्र पढ़ा]

(मंत्र)—भदखूराज खोपड़ी साज क्लिं भ्रिंग ह्रिं भिरिंग पट्ट झट्ट भाग नाग जाग राग मिछन सिछन छू छूः दोहाई गुरु गोरखनाथ बसीठ चंडाल बजावें कंडाल दोहाई गुरु भैरवं बाबा काबा सरीफ़ बड़ा हरीफ़ छूछूः—॥

प्रदानिका—लाओ बाबा जी तुम्हारी पाइयां छू लें अब सातों जन्म तुम से उद्धार न हूंगी बाबा जी भेंट लेव ॥

[सपथूदास ने भेंट ले कर कहा]

सपथू०—बच्ची तू इस सम्पूर्ण नगरी में प्रगट कर दे कि बाबा लोग जो कजरी बन में ठहरे हुये हैं सो अतीव

उत्तम औषधि करती हैं जिस किसी को आवश्यक हो बाबा जी के पास जाय औषधि करावे और जल्द ही आवें क्यों कि उन का निवास केवल एक ही पक्ष रहेगा ॥

प्रदानिका—अच्छा मैं अभी जाकर कह दूंगी बाबा जी नमस्कार है ॥

सपथू०—प्रसन्न रह भैरवं जी कुशल करें ॥

[प्रदानिका गयी और बहुत से मनुष्य नगरी की ओर से आते हुये देख पड़े]

सपथू०—जा बच्चे मंडूक उन लोगों से कह कि मेरे भोग के हेतु दही पूड़ी और शक्कर भी लेते आवें (चेला गया)

[सब लोग आये सामान लाये]

[सपथूदास इत्यादि भोजन करने बैठे]

झपटूदास—अ ह ह ह आज बड़ा चैन है ॥

झाड़गिरि—अ ह ह ह क्या अच्छा दही है ॥

काशानंद—अ ह ह ह कैसी पूड़ियाँ बनी हैं ॥

झुनकानन्द—अ ह ह ह ह शक्कर च अ ह ह शक्कर ॥

सपथू०—अ ह ह क्या भोजन बनी है हमारे राम तो इसी में मगन हैं ॥

[भोजन कर चुकने पर सबों को चंगा किया वे लोग चले गये]

[गन्दार और चन्दार आये]

सपथूदास—तुम लोगों का क्या प्रयोजन है ॥

दोनों—ह ह ह ह ह ह हम से तो मारे हंसी के कहते ही नहीं बनता ॥

सपथू०—ह ह ह ह अब हम को भी बड़ी हंसी आती है

दोनों—अच्छा तो हंसो ॥

सपथू०—भाई हमारे साथ वाले भी खूब हंसो ॥

[सब खिल खिल खिल् खिल हंस रहे हैं]

[थोड़ी देर के बाद सपथूदास ने उन दोनों से पूंछा तो मालूम हुआ कि वे वशीकरन मंत्र सीखा चाहते हैं बतलाया]

(मंत्र)—भूतन के सिर राजन के राज नहिं होवे तो बिगड़े काज ओं मम् बासी बम् बम् बम् भूतेश्वरी कुरु कुरु स्वाहा खट्ट पट्ट गट्ट सट्ट शीघ्र भट स्वाहा॥ छू छूः दोहाई गुरु गोरखनाथ की दोहाई भैरव बाबा की दोहाई लोना चमारी की दोहाई ऊंचे वाले की छू छूः ॥

[सब चले गये]

[एक ओर से झगड़ू मार्ली बड़े क्रोध से तिउरी चढ़ाये कूल लचकाये झपटा २ इन अवधूतों के पास आ पहुंचा]

झगड़—अभी उठो जल्दी उठो देखो तो इन का बैलचक्कपन, विना पूंछे पुछाये यहां चले आये कहो तुम से किस ने कहा कि यहां ठहरो, टिको ॥

सपधू०—अरे भाई भागो २ वही पहिले कोसी व्यवस्था फिर आ गयो भैरव जी ने सुख नहीं भोगने दिया ॥

झगड़ू—ऐरनं भैरनं अभी जाव जाव जाव जाव नाहीं तो डाढ़ा पाढ़ा उखाड़ि पुखाड़ि के अबहीं धूलि कूलि में मिला दूंगा ॥

सपधू०—अरे बर्भ जाता हूं क्यों जल्दी करता और बकर बकर बकता है ॥

झगड़ू—देख मूर्ख बच्चा मत कह तूही हमारा बच्चा है अब जो बच्चा बच्चा करेगा तो ऐसा गच्चा दूंगा कि अच्चा तक की याद न भूलेगी और क्यो भ्यों की जीभ अभी उखाड़ डालूंगा ॥

[सब लोग भागते और हांफते हुये दौड़े चले जाते हैं कहीं कुछ गिरा पड़ता है कहीं कुछ किसी का होश हवास ठीक नहीं है]

[मार्ग में कोतवाल साहब चारों का पता लगा रहे हैं]

[सपथूदास इत्यादि वहीं से हो कर निकले]

कोतवाल—दर्शना देख तो ये बदमाश लोग मालूम पड़ती हैं, पुकारो तो, जोगिया सूरतें बनाये हुये देख वे भगे जाती हैं ॥

दर्शना—मोहिं ते का साहब कहो ॥

कोतवाल—ध बरचो— तुझ को मैं साहब कहूंगा ॥

दर्शना—मरे हजूर मोहिं का साहेब काहे कहहो ॥

कोतवाल—नालायक इन्सान भी कहीं खाया जाता है ॥

दर्शना—साहेब मैं का जानौं कि खाओ जात है व नाईं खाओ जात है, साहेब इन्सान का भाव का है आठ आना का हमें खइबे भर का मिल जाई ? ॥

कोतवाल—बेवक़ूफ़ इन्सान का कहीं भाव होता है ॥

दर्शना—नाहीं साहेब इन्सान का तो भाव होत है बेव-क़ूफ़ का आई कहत हौ ॥

कोतवाल—भाव इनका नहीं होता और न ये खाये जाते हैं॥

दर्शना—तो साहेब बड़ दाम कै चीज़ होइ है, और खाये काहे नाईं जात हैं ? ॥

कोतवाल—जल्दी पकड़ो जल्दी पकड़ो ॥

दर्शना—कहिका ? कहिका ? ॥

कोतवाल—वे बदमाश जो भगी जाती हैं ॥

दर्शना—ठाढ़ रहौ बदमाशौ ठाढ़ रहौ बदमाशौ भौ बद-
माशौ सुनत नाई हौ—

[सपथूदास इत्यादि सब खड़े हो गये]

[दर्शना ने पास पहुंच कर यह कहा]

दर्शना—चलौ चलौ ऐसी चलौ ॥

सपथू०—अरे भाई हम लोगों का क्या अपराध ? कहां ले
चलोगी ॥

दर्शना—दई घर ॥

सपथूदास—अरे भाई यह स्त्री कहां आवेगी जो नई नई
विवाह लाये है ॥

दर्शना—अबे चलत है या बकर बकर करिहै जैस को-
तवाल कहैं तैस कर ॥

सपथू०—हाय रे दई कोतवाल कोतवाल हाय कोतवाल के
पास क्यों ले चलोगी ॥

दर्शना—ऐं ऐं तू जल्दी न चलिहै (दर्शना ने वर्छे ओर
से एक धेंचा दिया ॥

सपथू०—अरे भाई चलता हूं (आह आह करता चल पड़ा)

[जब कोतवाल के पास पहुंचे]

कोतवाल—खूब माल तुम लोगों ने उड़ाये ॥

सपथू०—साहब आप सब ले लें ॥

कोतवाल—अच्छा जाओ लेकिन ऐसा काम कभी न करना॥

[सपथूदास ने सब माल जो प्रदानिका से पाया था कोतवाल को दे दिया]

[फिर सब चलते हुये]

भा.डुगिरि—हरि नारायण ऐसी बरात किसी को न भुगतनी पड़े ॥

सपथू०—जो होनहार है वह अवश्य हुआ चाहे, देखिये कि एक सखी ने श्री कृष्ण जी से पंछा था कि आपने राधा प्यारी को छोड़ कुबिजा से क्यों प्रीति बढ़ाई है तब श्री कृष्ण जी ने यह बचन कहा था—

होनहार नहिं मिटत सखीरी। कुबिजा नेह लग्यो री॥
राधा हमरी विमुख भई हैं। जोगिन रूप धरयोरी॥
हम से प्रीत छुटत नहि प्यारी। पै उनको नहिं ख्याल भयोरी॥ (होनहार)
जोग लिया भोग तजि करिकै। मों मन सोच दयोरी॥
कमल चरण है कौन अपर बल। फिर राधन श्याम मिल्योरी॥ (होनहार)

[सब लोग कुटी में पहुंच गये]

भाडुगिरि—भाइयो हम सबो ने मार्ग में बहुत ही क्लेश उठाया अब कुटी को देख हुलास आती है आओ सब

बांह पसार २ मिल भेंट खूब रो धो लें, क्योंकि जो मरमुर जाते तो एक दूसरे को क्यों कर देखता ॥

[सब लिपट २ रोय रोय कर हू हा मचा रहे हैं]

[पड़ोसी जन देखने को चले]

लम्पड़—अरे भाइयो देखो तो आय, यहाँ तो अभी कोई थाही नहीं अब मियार से कौन भूकने लगी ॥

चिमध्—नाहीं नाहीं सपथूदास जी आ गये ॥

लम्पड़—अब रोने का क्या कारण है? जो खड़ा है वह खड़ा ही खड़ा, जो बैठा है वह बैठा ही बैठा, जो पड़ा है वह पड़ा ही पड़ा रो रहा है एक स्त्री न्यारी ही सपथू बाबा के छाती पै अपनी खोपड़ी पटक रही है ॥

[एक ओर से गुरु मुकुन्दर गिरि सम्पूर्ण शरीर में कालो भस्म रमाये जटे बिथराये बग़ल में बाघम्बर दाबे चिमटा हाथ में लिये गुरु घंटाल गुरु घंटाल करते चले आते हैं]

मुकुन्दर—अरे बच्चो क्यों रो रहे हो? ॥

[सब लोग दौड़ कर मुकुन्दर गिरि के पैरों पड़े]

मुकुन्दर—बच्चे इच्छा पूर्ण हो अब यह बताओ कि क्यों रोते हो? ॥

सपथू—ऊं हुं हुं गुरुजी ऊं ऊं हुं बतावौं क्या लज्जा नहीं कहने देती है, ऊं हुं हुं गुरु जी—

[इसी प्रकार और भी सब रो रहे हैं]

मुक्त०—बच्चे रोओ मत देखो अभी तुम्हारे शोक को हरता हूं जैसा कुछ हाल होवे यथार्थ कह दो ॥

[सपथूदास कहते हैं]

[गाना दोहरा में]

सब प्रसंग चित दे सुनों। देंहु गुरू बतलाय ॥
नारि व्याह के कारणे। दुख पायों बहु जाय ॥
कष्ट क्लेश व्यापो अधिक। भयो क्रुद्ध मम घोर ॥
दिवस रात्रि कल पड़त नहिं। जान जात है मोर ॥
गुरू हाय अब कस करिय। जियबो है नहिं नेग ॥
भागि कतहूं अब जाइ हैं। रहब नहीं या देश ॥
अरे दई यह जोग क्या। दीन्ह्यों आनि लगाय ॥
वृद्ध आयु को शोक है। क्यों कर मिटहि बनाय ॥

चौपाइयां।

अन्न वारि मुहिं नीक न लागत।
जियत मरत झुकि झुकि पुनि जागत ॥
चहहुं मरण अब होहि गुसाईं।
खैंचहु मोंहि रजक की नाईं ॥

यह सुख लै रहिहौं मन्साह।
तौकि करहिं सुहिं मिष्ठ अहाह॥
इच्छा मेरी पूरन करहु।
नारि सहित मोकों तुम हरहु॥
जियब चहत नहिं हम हे स्वामी।
करहु दया तुव अन्तर्यामी॥

मुकु०—अरे बच्चे ऐसा मत कह अवधूत जन क्लेश निन्दा और दुख को भी पाकर सन्तोष ही करते हैं—
खूंदन तो धरनो सहै, सहै और नहिं कोय॥
सम धरनी होवहि मनुज, ता सम बड़ा न दोय॥

[ऐसी अनेकों शिक्षा मुकुन्दर गिरि कर रहे हैं]

झुनकानन्द॥ मैं अब घर को हो आऊं फिर किसी समय पर मिल रहूंगा॥

[सपथू के कहने से झुनकानंद चला गया]

४ अंक आरंभ हुआ।

[झाड़गिरि काग्रानन्द और झपटूदास अपने २ घर जाने के लिये सपथूदास से आज्ञा लेते हैं]

सपथू०—आइयो दो दिवस को और कृपा करो फिर अब घर तो जाओहीगे॥

[मुछन्दर गिरि रंगभूमि में यकायक बड़े ज़ोर से गिर पड़े]

सपथू०—अरे अरे गुरु जी क्या आप गिर पड़े हाय २ बड़ी चोट लग गयी च च च हाय हाय ॥

कंजरी—अरे गुरु जू हाय गतवा माँ ढेर चोंट लगिगै होइ

[सब लोग झाड़गिर इत्यादि पास आये और गुरु जी का हाल पूंछा तब सपथूदास ने कहा]

सपथू०—हमारे गुरु जी अकस्मात धरती पै गिर पड़े ऐसी चोट लगी है कि उन के जीवन की आशा नहीं दाँत उखड़ गये खोपड़िया फट गयी कुछ भी हवास ठीक नहीं है ॥

सबलोग—नारायण नारायण अब कैसी हो भाई हमारी सम्मति तो यह है कि श्मशानी बना कर गुरु जी को भागीरथी पै ले चलें (गये हती हरि भजन को ओंटन लगे कपास)

[मुछन्दर गिरि को कुछ २ होश आ गया]

मुछ०—बच्चो तुम लोग क्यों खड़े खड़े रो रहे हो ? क्या हुआ, मुझ बाबा से कहो तुरन्त ही कहो महा सन्देह है—

सबलोग—गुरू जी आप अभी भूमि पै अकस्मात गिर पड़े थे सो एक घंटे तक स्वासा चलती न देख कर आप के जीवन से निरास हो हम सब रो रहे थे—

कंजरी—या बिरियां मोकों बडो ही आनन्द भेव जो गुरु जू जीव उठे धन्य है परमेसुर को जाने बूड़त मोहिं उबारयो अब तौ मैं सदा मुंह भरि २ नारायण २ करिहौं॥

मुकु०—बच्चे मपथूदाम अब मैं भी आज निज स्थान को जाया चाहता हूं॥

सपथूदाम—गुरु जी मेरी सम्मति तो यह है कि कुछ दिवस दोनाश्रम में रह कर अनुचर को कृतार्थ कीजिये अभी न जाइये कदाचित जाया ही चाहो तो जाव पर मेरे मंडूक शिष्य को जिसे मैंने बालकपन से अपने समीप रख कर पुत्र सम पाला है छोड़ जाइये, बिना इस के मुझे एक पल पर भी आनन्द न मिलेगा—

मुकुन्दर—अच्छा मंडूक तू बना रह, आओ झपटूदास दास काणानन्द भुनकानन्द झाड़गिरि हम तुम सब चलें॥

मंडूक—गुरु बाबा मैं तो यहां नहीं रहूंगा, रह कर कष्ट कौन सहे॥

मुकुन्दर—अरे हां देख सपथूदास तेरा गुरु तुझे कैसा चाहता है॥

मंडूक—होंगे गुरु धुरु ऐसे गुरुओं को मैं चुटकियों से उड़ाता हूं॥

मुछन्दर—चुप चुप अब ऐसा बचन मुख से न निकालिये ॥

मंडूक—कैसे बचन ? ॥

मुछन्दर—जैसे तू ने अभी कहे ॥

मंडूक—मैं तो कहूंगा कहूंगा फिर कहूंगा क्या किसी का डर पड़ा है ? ॥

मुछन्दर—अच्छा जा तेरा भला कभी न होगा ॥

मंडूक—मुझ अकेले को भला हो कर के क्या करना है कोई स्त्री पुरुष के जोड़े वाले को ऐसा श्राप दो ॥

मुछन्दर—चेला तू तो छिपी हुई खड़ग ही निकला ॥

मंडूक—हा ह ह ह बाबा आप छिपी तोप निकल आवें ॥

मुछन्दर—अच्छा अच्छा अच्छा देख अभी तेरी क्या दशा होती है ॥

मंडूक—बाबा आप बचे रहना ॥

[ऐसा कह कर मंडूक चला गया]

[सपथूदास मलीन चित्त खड़ा २ कुछ सोच रहा है]

मुछन्दर—बेटा सपथूदास तू मलीन चित्त क्यों खड़ा है ? ॥

सपथू०—एक तो मंडूक चला गया दूसरे एक स्त्री को ब्रह्म-राक्षस ने आकर घेर लिया है इस कारण वह व्याकुल है अब कुछ उपाय करो ॥

मुछन्दर—हाँ मैं समझ गया अपनी स्त्री के ठौर तू ने एक स्त्री कहा ठीक है बड़ों से अदब सदैव करना चाहिये—

सपथूदास—गुरु जी मैं अति व्याकुल हौं ॥

मुछ०—अरे बच्चे व्याकुल न हो देख ब्रह्मराक्षस क्या कोई कैसा ही राक्षस क्यों न हो तुर्तही भग जावेगा, ले यह भभूत मेरे गुरु छछून्दर गिरि की दी हुई सदा से मेरे पास रहा की है सहस्रों ब्रह्म राक्षस इसी से मैंने नाश किये हैं इस को तीन बार आंख में लगा देना आनन फानन हाथ जोड़ भो महाराज २ करता फिरेगा—

[सपथूदास ले गया और आंख में लगाया]

[कंजरी डौंक कर बोली अर्थात् ब्रह्मराक्षस बोला]

कंजरी—हम सदृश ब्राह्मणों को कौन दमन करने वाला है ऐसा ही विरुद्ध चरण कहीं उसी पर न फिर जावे—

सपथू०—महाराज मैं इस स्त्री को अभी विवाह लाया हूं मेल मिलाप तक अभी नहीं हो पाया है और आप सताये मारे डालती हैं हाय क्या करूं ॥

[मुछन्दर गिरि ने कामानन्द को सपथूदास के पास भेजा]

[मार्ग में]

काणानन्द—सुनिये भाई सपथूदास होत! (सपथूदास खड़ा हुआ)

[सपथूदास और काणानन्द परस्पर वार्त्ता करते चले आते हैं]

मुकुन्दर—कहो बच्चे बीमारी शान्ति हुई? ॥

सपथूदा०—गुरु जी कुछ भी न पूंछिये ॥

मुकुन्दर—क्यों क्यों कुशल तो है? ॥

काणानन्द—सपथूदास लज्जा के कारण आप से कुछ नहीं कहते ॥

मुकुन्दर—लज्जा किस बात की यह तो सभी कहते और करते आये हैं ॥

सपथू०—गुरु जी आप की भभूत कुछ उपयोगी न हुई मैंने निश्चय प्रण किया है कि कदाचित इस के जान में कुछ जोखों हुई तो मुझे भी आत्मघात करना पड़ेगा ॥

मुकु०—है हैं अच्छी नहीं हुई?॥

सपथू०—गुरु जी चल कर देख लीजिये ॥

(मुकुन्दर गिरि सब सहित गया और धरती पर बड़े ज़ोर से हाथ दे मारा)

कंजरी—यह क्या दिवार गिरी है?

०—कु० अरे देख अभी भगाता हूं—

कंजरी—चलजा चल तुझ साथी मेरे खड़ाऊं धोया करते हैं॥

मुकुन्दर—सत्य है लातों की देवी बातों से नहीं मानती है लावे तो सपथू मेरा जंगी सोंटा—

कंजरी—अरे चल तू क्या तेरा गुरु छछूंदर गिरि अपने पुकुन्दर गिरि सहित आवे तो भी विनौती देता हूं—हाँ एक मंडूक नाम चेला अवश्य मेरी मन मानी दशा कर सकता है॥

मुकु०—अरे देख तेरी क्या दशा होती है॥

(इतना कहना था कि ब्रह्मराक्षस मुकुन्दर गिर ही पर आ आरूढ़ हुआ)

एक त्यागि एक लै धायो। अजब स्वांग देखन में आयो॥

(सब लोग झार फूंक कर रहे हैं पर इस से क्या होता है)

मंत्र जंत्र अरु जादू टोना।
इन महं पड़ि बुधि बल सब खोना॥

सपथू—भाइयो अब मंडूक ही को जहाँ कहीं हो खोज कर ले आओ झाड़गिर तो पश्चिम को ओर काणानन्द दक्षिण को ओर झपट्टदास उत्तर को जावें और मैं भी पूर्व दिशा को जाता हूं (सब गये)

(कुछ दिन बाद झपट्टदास लौट आया)

(पश्चिम दिशा में झाड़गिरि ने खूब खोजा)